# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

| परीक्षा का विषय | विषय कोड | | | परीक्षा का माध्यम |
|---|---|---|---|---|
| HINDI | 0 | 5 | 1 | ENGLISH |

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

| 2 | 4 | 5 | 2 | 8 | 0 | 5 | 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | FOUR | FIVE | TWO | EIGHT | ZERO | FIVE | NINE |

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL
माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल

निम्न दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

| उदाहरणार्थ | 1 | 1 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक | एक | दो | चार | तीन | नौ | पाँच | छः | आठ |

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में [X] शब्दों में [X]

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक [11]

ग – परीक्षा की दिनांक [19 | 02 | 22]

2022

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी परीक्षा 451025

| पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर | केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर |
|---|---|
| अनिता परमार (हस्ताक्षर) | (हस्ताक्षर) |

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

**प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।**
**निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदाकिंत संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।**

| उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा | परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा |
|---|---|
| मो. शहीद खान<br>उच्च. माध्य. शिक्षक<br>पजी. क्रमांक– 015742 | R.K.Barawal<br>UMT<br>Reg.- 25372 |

नोट :– ''हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।''

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करे और न ही छात्र उपयोग में ले। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखें उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें → केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें → परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें

| प्रश्न क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक | प्राप्ताक (अंको में) |
|---|---|---|
| 1 | | |
| 2 | | |
| 3 | | |
| 4 | | |
| 5 | | |
| 6 | | |
| 7 | | |
| 8 | | |
| 9 | | |
| 10 | | |
| 11 | | |
| 12 | | |
| 13 | | |
| 14 | | |
| 15 | | |
| 16 | | |
| 17 | | |
| 18 | | |
| 19 | | |
| 20 | | |
| 21 | | |
| 22 | | |
| 23 | | |
| 24 | | |
| 25 | | |
| 26 | | |
| 27 | | |
| 28 | | |
| कु. | | |

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 1
उत्तर - 1.

(i) (ब) जग-जीवन का

(ii) (स) तुलसीदास की

(ब) जब मन खाली न हो।

(द) चाँद सिंह को

(अ) आनन्द यादव

(vi) (अ) वि

प्रश्न - 2
उत्तर - 2

प्रत्याशा

लघमिन

(iii) मराठी

(iv) क्रम

(v) उत्साह

मध्यप्रदेश



MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

...ात्रिक

...काश

प्रश्न - 3
उत्तर - 3

(i) बात की चूड़ी मर जाना - बात का प्रभावहीन हो जाना

(ii) अवधूत - शिरीष के फूल

(iii) सि... र वैडिंग - यशोधर बाबू

(iv) ... केन्द्रीय बिन्दु - कथानक

(v) ...ई छन्द - 16-16 मात्राएँ

(vi) तत्सम - संस्कृत के मूल शब्द

प्रश्न - 4
उत्तर - 4

(i) उष... - सूर्योदय होने पर टूटता है।

(ii) पह...ान लुट्टन सिंह के दो पुत्र थे।

(iii) सिन्धु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर मुअनजो-दड़ो था।

M
P
B
S
E

प्रश्न क्र.

(iv) आमतौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15-30 मिनट होना चाहिए।

(v) शब्दगुण तीन प्रकार के होते हैं।

'दूसरा घर कर लेना' मुहावरे का अर्थ पक्ष परिवर्तन कर लेना है।

जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, वे क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

M P B S E

प्रश्न -5
उत्तर -5

(i) सत्य

(ii) असत्य

सत्य

असत्य

(v) असत्य

(vi) असत्य

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 6
उत्तर - 6

...चे अपनी माता के आने की आशा में नीड़ों से ... रहे होंगे। वे सुबह से भूखे हैं, उनकी माँ ... लिए खाना लेने गई है, वे भोजन की प्रतीक्षा में अपनी माँ के आने का इंतजार कर रहे हैं।

प्रश्न - 7
उत्तर - 7

'उषा' कविता में कवि ने भोर के नभ की तुलना नीले ... से की है। कवि क्षण-क्षण में रंग बदलते ... को देखकर कहते हैं - प्रातः कालीन आकाश ... लग रहा है मानो किसी ने काली स्लेट पर लाल रंग की केसर मलकर उसे धो दिया हो। आगे कवि नभ की तुलना करते हुए कहते हैं कि आकाश की लालिमा को देखकर लग रहा है किसी ने सिल पर खड़िया मिट्टी लगा दी हो। अंत में कवि नभ की तुलना सरोवर में झिलमिलाते गौर वर्ण के युवक से करते हैं।

M P B S E

प्रश्न - 8
उत्तर - 8

भक्तिन ने महादेवी को कम-साधनों में सरल जीवन जीना सिखा दिया। वे उन्हें भोजन में मक्का के पुए सुबह-साँझ जैसे देती, ज्वार के भुट्टे के हरे दानों की खिचड़ी भी अब उन्हें स्वादिष्ट लगने लगी,

प्रश्न क्र.

इस तरह के सरल भोजन से महादेवी देहाती हो गई।

प्रश्न - 9
उत्तर - 9

ढोलक की आवाज रात के सन्नाटे में काम करती थी। मलेरिया और हैजा से अर्धमृत लोगों की लिए ढोलक की आवाज संजीवनी का काम करती। ढोलक की आवाज सुनते ही ं के अंदर बिजली सी दौड़ जाती। बच्चों और युवकों के सामने दंगल का य आने लगता। इससे लोगों की तकलीफें होती और जो लोग महामारी से नही बच पाते उन्हें आँखे बंद करने में तकलीफ नही होती।

प्रश्न - 10
उत्तर - 10

यशोधर बाबू और उनकी पत्नी दोनों ही मूलतः आधुनिक व्यक्तित्व के नहीं थे। ~~लेखक~~ यशोधर माता - पिता के देहांत के बाद उनका पालन - ण उनकी बुआ द्वारा किया गया। नौकरी तलाश में शहर आए यशोधर बाबू को दा ने आश्रय दिया। किशनदा आदर्शों का पालन करने वाले परंपरावादी व्यक्ति थे। उनसे प्रभावित होकर यशोधर बाबू परंपरावादी हो गए। जबकि उनकी पत्नी संयुक्त परिवार

प्रश्न क्र.

में रहने के कारण अपनी इच्छाओं का दमन करती रही। बादमें बच्चों के आग्रह पर उन्होंने अपने आप को समय के साथ ढाल लेना उचित समझा। इसलिए यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं।

प्रश्न - 11
उत्तर - 11

M
P

मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखना होता है कि भाषा और शब्दों में अशुद्धियाँ न हो। भाषा सरल व प्रभावी हो। वाक्य छोटे …था ऐसे हो जिन्हें लोगों को समझने में आसानी …। संख्या शब्दों मे लिखी हो जिससे पाठको पढ़ने में समस्या न आए।

प्रश्न - 12
उत्तर - 12

किसी काव्य को पढ़ते समय उसमें विरोध न होते …ए भी विरोध का आभास हो उसे विरोधाभास …लंकार कहते है।

→

" मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ "

प्रश्न -13
उत्तर -13

सोरठा छन्द अर्धसममात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। पहले पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। यह दोहे उल्टा होता है।

ा० → ।। ।। ऽ। ऽ। ।
रहिमन धागा प्रेम का,
मत तोड़ो चटकाए
टूटे से फिर ना जुड़े
जुड़े गाँठ परिजाए।।
ऽऽ ऽऽ ।।ऽऽ

प्रश्न -14
उत्तर -14

सी वाक्य में अतिरिक्त बल देने के लिए जिन दों का प्रयोग होता है, उन्हें निपात शब्द हा जाता है।
उदा० → तुम्हें रुकना __ही__ होगा।

राम ने __भी__ खाना खाया।

यहाँ 'ही' और 'भी' निपात शब्द हैं।

M
P
B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्न -15
उत्तर -15

ईश्वर के अनेक नाम है।

ुझे मात्र बीस रुपये दीजिए।

प्रश्न -16
उत्तर -16

'तुलसीदास'

दो रचनाएँ - रामचरितमानस, कवितावली

~~भाव पक्ष - तुलसीदास ने अपनी ज्यादातर रचनाएँ अवधि भाषा में की है। इन्होंने कुछ रचनाओं में ब्रज भाष~~

भाव पक्ष - तुलसीदास राम भक्ति धारा के कवि थे। नकी रचनाओं में श्री राम के प्रति इनका समर्पण ाफ नज़र आता है। इन्होने अपनी रचनाओं में पने आप को राम का सेवक या दास बताया है। ्होंने भक्ति-भावना से परिपूर्ण रचनाएँ की हैं।

कला पक्ष - तुलसीदास ने अपनी ज्यादातर ~~कविताएँ~~ रचनाएँ अवधि भाषा में की हैं। इन्होने कुछ रचनाओं में ब्रज भाषा व खड़ी बोली का भी उपयोग किया है। चित्रात्मक रचनाएँ भी इनके द्वारा की गई है।

M
P
B
S
E

प्रश्न क्र.

साहित्य में स्थान - तुलसीदास अपने काल के सगुण भक्ति धारा के श्रेष्ठ कवि रहे हैं। इन्होने अपने साहित्य में श्री राम का सजीव वर्णन किया है, इसलिए वह लोकप्रिय कवि थे।

प्रश्न - 17
उत्तर - 17

'महादेवी वर्मा'

दो रचनाएँ - नीरजा, रश्मि, पथ के साथी

भाषा - शैली - प्रारंभ में महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाएँ ब्रजभाषा में की। धीरे-धीरे उन्होने खड़ी बोली का प्रयोग अपनी रचनाओं में चालू किया। इन्होने सरल सीधे शब्दों में बात कही है। इनकी रचनाओं में वेदना का भाव है। इनकी कविताएँ गीतमयी हैं।

साहित्य में स्थान - महादेवी वर्मा को उनकी रचनाओं के लिए 'मंगलाप्रसाद' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसे अतिरिक्त उन्हें पद्म भूषण एवं पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया। इन्हे 'आधुनिक युग की मीरा' की उपाधि दी गई। यह छायावाद की लेखिका रहीं हैं।

प्रश्न क्र.

प्रश्न -18
उत्तर -18

तत्सम शब्द वे शब्द हैं जो संस्कृत भाषा से बिना परिवर्तन या सँशोधन करे हिंदी में लिए गए हैं। अन्य भाषाओं जैसे मराठी, बंगला से भी कुछ शब्द सीधे हिंदी में लिए जाते हैं।

तद्भव शब्द वे शब्द हैं जो सँस्कृत या अन्य भाषा से सीधे हिंदी में न आकार परिवर्तन और संशोधन के साथ आए हैं।

| तत्सम | तद्भव |
|---|---|
| अश्रु | आँसु |
| स्कंध | कंधा |

प्रश्न - 19
उत्तर - 19

अथवा

(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'शौर्यभाव' है।

राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का विशिष्ट स्थान है।

(iii) सुदीर्घ का अर्थ है विशाल या बड़ा।

M P B S E

प्रश्न क्र.

M P B S E

प्रश्न - 20

उत्तर - 20

आँगन - - - - - - - - - - - - आया है।

संदर्भ - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 में संकलित 'रुबाईयाँ' से अवतरित है। इसके रचयिता फ़िराक गोरखपुरी है।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बच्चे के चाँद के लिए मचलने की ज़िद को दर्शाया है।

व्याख्या - कवि कहते है कि माँ अपने लाड़ले पुत्र को आँगन में लिए खड़ी है। आसमान ~~के~~ में चाँद को देखकर बच्चा उसे लेने की ज़िद कर रहा है। कवि कहते है कि चाँद को लेने के लिए बालक ठुनक रहा है अर्थात मचल रहा है। वह अपनी माँ से चाँद लाने को कह रहा है। माँ चाँद लाने में असमर्थ इसलिए वह अपने पुत्र को दर्पण में चाँद प्रतिबिंब दिखाती है और कहती है कि ाइने में देखो चाँद आ गया है। माँ अपने पुत्र के मुख की तुलना चाँद के टुकड़े से करती है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न -21
उत्तर -21

पैसा पावर - - - - - - - - - - - - - रस है।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह भाग -2 में संकलित पाठ 'बाजार दर्शन' से ~~उद्धत~~ उद्धृत है। इसके रचयिता 'जैनेंद्र कुमार' है।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि ने बताया है कि यदि हमारे पास पैसा है तो हम अपनी 'पर्चेजिंग पावर' का प्रयोग कर अनावश्यक वस्तुएँ खरीद लेते है।

व्याख्या - कवि ने इन पंक्तियों में पैसे को पॉवर कहा है। कवि कहता है कि पैसा होते हुए भी यदि हम उससे सामान न खरीदें तो वह पैसा किसी काम का नही होता। अगर पता करना है कि किसी व्यक्ति के पास कितना पैसा है तो उसके बैंक-हिसाब देखने की जरूरत होती है, उसका सामान, माल जो उसने उन पैसो से खरीदा है, वह तो बिना देखे ही उसके घर में दिख जाता है। जिस व्यक्ति के पास अधिक पैसा होता है वह अपनी पर्चेजिंग पावर का प्रयोग करके अपने अहं को संतुष्ट करता है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 22
उत्तर - 22

73, परीक्षा भवन
जबलपुर (म.प्र.)

दिनांक - 19/02/22

प्रिय मित्र कमलेश,
नमस्कार।
आशा है तुम स्वस्थ व सुखी होगे। यहाँ भी सब ठीक है। तुम्हें यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव होगा कि मेरे बड़े भाई का विवाह दिनांक 25/02/2022 को संपन्न होना है। इसके लिए मैं तुम्हें सादर आमंत्रित करना चाहती हूँ। शादी की रस्में 22/02/2022 से आरंभ हो जाएँगी। अतः तुम अपने भाई-बहनों के साथ इसके पहले ही आ जाना। साथ में ~~आ~~ थोड़ा समय व्यतीत करेंगे। भैया और मेरी ओर से तुम्हें यह आमंत्रण पत्र भेज रही हूँ। तुम्हारी प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारी सखी,
दिव्यता।

MPBSE

प्रश्न - 23
उत्तर - 23

'छात्रजीवन और खेल'

1. प्रस्तावना
2. खेलों का महत्व
3. छात्रजीवन पर प्रभाव
4. उपसंहार

प्रस्तावना ⇒ खेल हमारे जीवन में ~~अत्~~ अत्यंत महत्वपूर्ण किरदार निभाते है। शिक्षा व अन्य कामों के साथ खेलों का अपना महत्व है। हमारे देश में अनेक खेल जैसे - क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, बैडमिंटन आदि अत्यंत रुचि के साथ खेले जाते हैं।

खेलों का महत्व ⇒ छात्र और उसके शारिरिक व मानसिक विकास के लिए खेलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। विभिन्न प्रकार के खेल शारीरिक मजबूती प्रदान करते हैं। इनसे विद्यार्थी स्वस्थ व रोगों से दूर रहते हैं। वे सुखी जीवन व्यतीत कर पाते है। कहा भी गया है स्वस्थ शरीर में ही निरोगी काया का वास होता है। मनुष्य का संपूर्ण विकास खेलों से ही संभव हो सकता है।

छात्रजीवन पर प्रभाव ⇒ खेल छात्रों की पढ़ाई से होने वाले तनाव को दूर करते हैं। वे छात्रों

M
P
B
S
E

मध्यप्रदेश
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

में स्फूर्ति का संचार करते है तथा उर्जा प्रदान करते है। छात्र जीवन में खेल छात्रों के अंदर प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करते है। जिससे छात्र अपनी पूरी कोशिश करके अपने आप को सर्वोच्च साबित करने का प्रयास करते है। खेलों से छात्रों के अंदर हार - जीत को स्वीकार करने की भावना आती है। वे अपनी हार को स्वीकार करके अपनी गलतियों को सुधारते हैं। विद्यार्थियों में मित्रता की भावना उत्पन्न करने में भी खेलों का महत्व हैं। पढ़ाई के साथ-साथ खेलों को भी नियमित रुप से खेला जाए तो छात्र राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग ले सकते है। इसलिए हमें प्रतिदिन खेलों को भी समय देना चाहिए।

उपसंहार ⇛ वर्तमान समय में खेलो का समय मोबाइल फोन ने ले लिया हैं जिससे विद्यार्थी का ~~सारि~~ शारीरिक विकास रुक गया है। अतः हमें जीवन में खेलो के महत्व को समझते हुए अपनी दिनचर्या में खेलों को भी पर्याप्त समय देना चाहिए। मन और मस्तिष्क खेलो से ही सुखी रह सकता है।

"स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है"

M
P
B
S
E